Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 04, (सितंबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 84–86

फूलों वाली फसलों में कीट नियंत्रण

डॉ अभिनव कुमार एवं डॉ अंकित कुमार
सहायक प्रोफेसर,
कृषि विज्ञान संकाय,
एसकेडी विश्वविद्यालय हनुमानगढ़, राजस्थान, भारत।

Email Id: – abhinavkumar188@gmail.com

आधुनिक कृषि में फूलों की खेती, जिसे हम फ्लोरीकल्चर कहते हैं, एक महत्वपूर्ण अंग बन गई है। फूल केवल सौंदर्य और सजावट के लिए महत्वपूर्ण नहीं हैंय वे धार्मिक, सांस्कृतिक और औषधीय महत्व भी रखते हैं। फूलों की माँग विवाह, उत्सव, पूजा–पाठ, होटल उद्योग और परफ्यूम निर्माण में लगातार बढ़ रही है। भारत में गेंदा, गुलाब, कारनेशन, ग्लैडियोलस, जर्बेरा, रजनीगंधा, लिली और ऑर्किड की फसलें व्यावसायिक रूप से उगाई जाती हैं। किसानों को इनकी उच्च कीमत और निर्यात क्षमता आकर्षित करती है। लेकिन इन फसलों के लिए सबसे बड़ी चुनौती कीटों और बीमारी है।नाजुक प्रकृति की फसलों पर कीटों का आक्रमण उनकी गुणवत्ता, रंग, आकार और बाजार मूल्य पर काफी असर डालता है। कीट उत्पादन को कम करते हैं और कभी–कभी फूलों को पूरी तरह से नष्ट कर देते हैं। ऐसे में फूलों की खेती में कीट नियंत्रण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

फूलों की फसलों में प्रमुख कीटों का प्रकोप

फूलों की फसलों में कई प्रकार के कीट पाए जाते हैं, जो पत्तियों, तनों, कलियों और फूलों को नुकसान पहुंचाते हैं। इनमें से कुछ कीट सीधे पौधे को नुकसान पहुंचाते हैं, जबकि कुछ कीट अप्रत्यक्ष रूप से वायरस और अन्य बीमारियां फैलाते हैं। ये सबसे आम वर्गीकरण हैं:

चूसक कीटों में सबसे पहले माहू, थ्रिप्स, जेसिड और सफेद मक्खी आते हैं। ये कीट कोमल कलियों और पत्तियों का रस चूसते हैं। इनके प्रकोप से पौधे की वृद्धि रुक जाती है, पत्तियाँ सिकुड़ जाती हैं और फूल छोटे रह जाते हैं। इनके द्वारा छोड़ा गया मधुरस अक्सर पौधों पर कालिखी फफूँदी पैदा करता है, जो पत्तियों को काला बना देता है और प्रकाश संश्लेषण की क्षमता को कम करता है।

दूसरी श्रेणी में हेलिकोवर्पा आर्मीगेरा सबसे हानिकारक फूल और कली भेदक कीट है। यह कीट अंदर से फूलों और कलियों को खाकर नष्ट कर देता है। यह गेंदा और गुलाब की फसलों को बहुत नुकसान पहुंचाता है। इस कीट के कारण उत्पादन और खरीदने योग्य फूलों की संख्या कम होती

है।

तीसरी श्रेणी में पत्ती खाने वाले कीट हैं, जैसे पत्तामक्खी, टिड्डे और इल्ली। ये कीट पत्तियों को छेदकर खाते हैं, जिससे पौधे कमजोर हो जाते हैं और पर्याप्त प्रकाश संश्लेषण नहीं कर पाते।

माइट्स चौथी श्रेणी में आते हैं। ये सूक्ष्म कीट पत्तियों की निचली सतह पर रहते हैं और पौधों का रस चूसते हैं। इनके कारण पौधों का विकास रुक जाता है और पत्तियां पीली ह ो जाती हैं। कारनेशन और गुलाब जैसी फसलों में माइट्स एक बड़ी समस्या बन जाते हैं।

कीट नियंत्रण की आवश्यकता

फूलों की फसलें बहुत संवेदनशील होती हैं। इनका उपयोग सजावट और ताजगी के लिए होता है, इसलिए कीटों से प्रभावित फूलों की मांग कम होती है। उपभोक्ता फूल खरीदना नहीं चाहते अगर उनकी पंखुड़ियाँ कटी–फटी या दाग–धब्बे हैं। किसान इससे बड़ा आर्थिक नुकसान उठाता है। इसके अलावा, थ्रिप्स और सफेद मक्खी जैसे कीट पौधों में वायरस रोग फैलाते हैं। वायरस से संक्रमित होने पर पौधा कभी नहीं बच सकता। यही कारण है कि फूलों की खेती में समय पर कीटों का पता लगाना और उनका नियंत्रण करना अनिवार्य है।

कीट नियंत्रण की विभिन्न विधियाँ

कीट प्रबंधन के लिए कई विधियाँ अपनाई जाती हैं, जिनमें सांस्कृतिक, यांत्रिक, जैविक और रासायनिक नियंत्रण शामिल हैं। इन सभी का समन्वित उपयोग ही सबसे अच्छा परिणाम देता है।

(क) सांस्कृतिक विधियाँ

सांस्कृतिक तरीके सबसे आसान और पर्यावरण–सुरक्षित कीट प्रबंधन हैं। इनमें फसल प्रबंधन की तकनीकें शामिल हैं जो स्वाभाविक रूप से कीटों की संख्या को कम कर सकती हैं। खेत की गहरी जुताई करने से कीटों के प्यूपा और अंडे मिट्टी में छिपे होते हैं। इसके अलावा, कीट और रोगग्रस्त पौधों को खेत से तुरंत निकालकर जला देना चाहिए। पौधों को उचित दूरी पर लगाने से हवा का संचार अच्छा रहता है, जिससे कीटों और रोगों का प्रसार कम होता है।

सांस्कृतिक नियंत्रण में संतुलित उर्वरक प्रबंधन भी शामिल है। नत्रजन की अधिक मात्रा पौधों को कोमल और रसदार बनाती है, जिससे कीटों का प्रकोप बढ़ जाता है। इसलिए नत्रजन, फॉस्फोरस और पोटाश को फसलों में संतुलित मात्रा में देना चाहिए। नियमित रूप से खरपतवारों को साफ करना भी आवश्यक है क्योंकि इन खरपतवारों पर कई कीट पलते हैं, जो बाद में मुख्य फसल को नुकसान पहुँचाते हैं।

(ख) यांत्रिक और भौतिक विधियाँ

यांत्रिक नियंत्रण में कीटों को सीधे हाथों से या यंत्रों से मार डाला जाता है। जैसे इल्लियों और अंडों को चुनकर नष्ट करना, पौधों को हिलाकर कीटों को गिराना आदि इसके अलावा, सफेद मक्खी और माहू जैसे कीटों को पीली चिपचिपी पट्टियाँ आकर्षित कर नियंत्रित करती हैं। रात में उड़ने वाले कीटों को पकड़ने के लिए भी प्रकाश प्रपंच का उपयोग करना फायदेमंद होता है।

पानी का तेजी से पौधों पर छिड़काव करना, जिससे कीटों (जैसे थ्रिप्स और माइट्स) धुलकर गिर जाएँ, एक प्रभावी विधि है। नर्सरी स्तर पर पौधों को कीटों से बचाने के लिए कई बार जाल घर भी बनाया जाता है।

(ग) जैविक नियंत्रण

जैविक नियंत्रण का मतलब है कि कीटों का नियंत्रण उनके प्राकृतिक शत्रुओं द्वारा

किया जाता है। यह उपाय दीर्घकालिक रूप से प्रभावी है और पर्यावरण के अनुकूल है। ट्राइकोग्रामा, उदाहरण के लिए, ततैया इल्लियों के अंडों में परजीवीकरण कर उन्हें नष्ट कर देती है। *Chrysoperla carnea* एक शिकारी कीट है जो माहू और थ्रिप्स को खाकर संभालता है।

Azadirachtin, एक नीम आधारित कीटनाशी, भी बहुत प्रभावी है। यह कीटनाशक कीटों को मारता है और उनके भोजन और प्रजनन को भी रोकता है। इसलिए कीट समाप्त हो जाते हैं।

(घ) रासायनिक नियंत्रण

रासायनिक नियंत्रण सबसे जल्दी और प्रभावी उपाय है, लेकिन इसका उपयोग केवल तब करना चाहिए जब कीटों का प्रकोप बहुत अधिक हो जाए। कीटनाशकों का उपयोग करते समय कुछ सुझावों का पालन करना चाहिए। दवाओं का छिड़काव सुबह या शाम के समय करना चाहिए, जब मधुमक्खियों जैसे मित्र कीट नहीं होते। साथ ही, एक ही दवा को बार–बार नहीं देना चाहिए, क्योंकि इससे कीटों में प्रतिरोधक क्षमता बनती है।

माहू, थ्रिप्स और सफेद मक्खी को नियंत्रित करने के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 SL का छिड़काव किया जा सकता है। इंडोक्साकार्ब 14.5 SC या स्पिनोसैड 45 SC का प्रयोग फूल और कली भेदक कीटों के लिए फायदेमंद है। प्रोपरगाइट 57 EC माइट्स को नियंत्रित करने में प्रभावी है।

एकीकृत कीट प्रबंधन

आजकल केवल एक ही उपाय पर निर्भर रहना उचित नहीं है। एकीकृत कीट प्रबंधन सर्वोत्तम उपाय है। इसमें सांस्कृतिक, यांत्रिक, जैविक और रासायनिक सभी प्रक्रियाएं शामिल हैं। रसायनों का उपयोग केवल आवश्यकता पड़ने पर किया जाता है, पहले सुरक्षित और सुरक्षित तरीकों को अपनाया जाता है।

एकीकृत कीट प्रबंधन का उपयोग करने से न केवल कीट नियंत्रण प्रभावी होता है, बल्कि उत्पादन लागत भी कम होती है और पर्यावरण पर कोई बुरा असर नहीं होता। यह उपाय किसानों को अधिक दीर्घकालिक लाभ देता है।

निष्कर्ष

भारत में फूलों की खेती तेजी से लोकप्रिय हो रही है क्योंकि इसमें उच्च आय प्राप्त करने की बहुत सी संभावनाएँ हैं। लेकिन इस क्षेत्र में कीट प्रकोप सबसे बड़ी चुनौती है। पूरी फसल बर्बाद हो सकती है अगर समय पर और सही तरीके से कीटों का प्रबंधन न किया जाए। किसानों को नियंत्रण उपायों को अपनाने से पहले कीटों को कैसे पता लगाना चाहिए, उनके जीवन चक्र और प्रकोप की स्थिति।

यांत्रिक, जैविक, रासायनिक और सांस्कृतिक सभी विधियों का समन्वित उपयोग करना सर्वोत्तम है। किसान एकीकृत कीट प्रबंधन का उपयोग करके फसल की रक्षा कर सकते हैं और उत्पादन लागत को कम करके अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। साथ ही, उपभोक्ता और पर्यावरण दोनों इस प्रक्रिया से सुरक्षित हैं। ताकि फूलों की खेती लंबे समय तक लाभकारी बनी रहे, आने वाले समय में टिकाऊ और जैविक कीट नियंत्रण पर अधिक ध्यान देना होगा।